राजस्थान GK

1857 की क्रान्ति

हस्तलिखित नोटस

राजस्थान क्लासेज

अब बेहतर परिणाम होगा आपकी मुट्ठी में

राज० में 1857 की क्रांती

⇒ AGG मुख्यालय (Agent to Governer General)

↓

1832 → अजमेर AGG का मुख्यालय
लॉकेट, राजस्थान का प्रथम AGG

1845 → आबू को AGG का मुख्यालय बनाया

⇒ **जॉर्ज पैट्रिक लॉरेन्स :-**

→ 1857 की क्रांति के समय राजस्थान का AGG था यह पहले मेवाड़ का पॉलिटिकल एजेन्ट था

* Note → जेम्स टॉड मेवाड़ का पहला पॉलिटिकल एजेन्ट था।

⇒ **अंग्रेजो की सैनिक छावनियाँ :- (6)**

(1) नसीराबाद (अजमेर)
(2) नीमच (M.P.)
(3) देवली (टोंक)
(4) एरिनपुरा (पाली)

→ इन चारो में क्रांति हुई।

(5) ब्यावर (अजमेर)
(6) खेरवाड़ा (उदयपुर)

→ इनमें क्रांति नही हुई।

① **नसीराबाद में क्रांति :-** 28 मई 1857

→ 15वी नेटिव इन्फेन्ट्री द्वारा क्रांति की शुरूआत।

→ 30वी नेटिव इन्फेन्ट्री ने भी समर्थन किया।

→ कै. वेनी, न्यूबरी, स्पोटिस्वुड → तीन अंग्रेज अधिकारियों की हत्या

→ सारे क्रांतिकारी दिल्ली चले गये।

② नीमच में क्रांति :- [3 जून 1857]

→ मोहम्मद अली बेग, सैनिक ने कर्नल एबॉट के सामने वफादारी की प्रतिज्ञा करने से मना कर दिया।

→ क्रांति का नेता - हीरा सिंह

** → शाहपुरा के राजा उम्मेद सिंह ने क्रांतिकारियों का समर्थन किया।

→ निम्बाहेड़ा (टोंक रियासत का भाग) में क्रांतिकारियों का जनस्वागत किया गया।

→ देवली छावनी (4) के सैनिक भी इसके साथ चल दिये तथा दिल्ली की ओर चल दिये।

→ नीमच के चालीस अंग्रेजों ने डुंगला गांव के रूघाराम के पास शरण ली। मेवाड़ के पो० एजेन्ट शॉवर्स ने इन्हे उदयपुर भेजा। उदयपुर के महाराणा स्वरूपसिंह ने इन्हे जगमंदिर में शरण दी।

③ एरिनपुरा में क्रांति :- [21 अगस्त 1857]

→ पूर्बिया सैनिकों ने आबू में क्रांति की थी।

→ नेता - कुशाल सिंह चाम्पावत (आउवा का सामंत)

→ यह खैरवा नामक स्थान पर सैनिकों से मिला।

→ बिठौड़ा का युद्ध :- [8 सितम्बर 1857]

कुशलराज सिंघवी (जोधपुर) + हीथकोट (अंग्रेज) V/S कुशाल सिंह चाम्पावत + क्रांति (विजय)

→ इस युद्ध में जोधपुर का ओनाड सिंह पवांर मारा गया।

→ चेलावास (पाली) का युद्ध :- [18 सितम्बर 1857]

जॉर्ज पैट्रिक लॉरेन्स (AGG) + मेकमेसन (मारवाड़ का PA) V/S कुशाल सिंह चाम्पावत (विजय)

→ इस युद्ध में मेकमेसन को मार दिया गया।

→ इस युद्ध को काले व गोरो का युद्ध भी कहा जाता है।

→ आहुवा का युद्ध :- 20/21 जनवरी 2018

हॉम्स (दिल्ली), + हसंराज जोशी (जोधपुर), v/s पृथ्वी सिंह (लाम्बिया)

→ कुशाल सिंह चम्पावत सहायता के लिये मेवाड़ चला गया।

→ अंग्रेजों ने आहुवा पर अधिकार कर लिया।

→ कुशाल सिंह चाम्पावत ने 1860 में नीमच में आत्म समर्पण कर दिया। इसकी जाँच के लिये टेलर आयोग बनाया गया।

→ कुशाल सिंह का साथ देने वाले सामंत :-

गूलर → बिशन सिंह (नागौर)

आलणियावास → अजीत सिंह (नागौर)

आसोप → शिवनाथ सिंह (जोधपुर)

→ शिवनाथ सिंह के नेतृत्व में विद्रोहियों ने दिल्ली की तरफ जाने का प्रयास किया। लेकिन नारनौल के पास अंग्रेज सेनापति गेरार्ड से हार गये।

→ केसरी सिंह चूण्डावत (सलूम्बर), जोध सिंह (कोठारिया, जोधपुर) — इन्होंने कुशाल सिंह को मेवाड़ में शरण दी।

⇒ सुगाली माता :- आहुवा की ईष्ट देवी

कर्नल हॉम्स ने इसे राजपूताना म्यूजियम (अजमेर) में रखा था। वर्तमान में यह पाली के बांगड़ म्यूजियम में है। यह काले संगमरमर की मूर्ति है। इसमें 10 सिर व 54 हाथ है।

⇒ तख्तसिंह :- क्रांति के समय जोधपुर का राजा

⇒ कानजी :- बिठौड़ा का सामंत जिसकी कुशाल सिंह चाम्पावत ने हत्या कर दी थी

→ 1835 में जोधपुर बटालियन का गठन किया गया जिसका मुख्यालय एरिनपुरा में है।

⇒ कोटा का जन विद्रोह :- 15 Oct 1857

→ विद्रोही - मेहराब खान (सैनिक) व जयदयाल (बकील)

→ पॉलिटिकल एजेन्ट बर्टन को मार दिया गया।

→ राजा रामसिंह - II को गिरफ्तार कर लिया गया।

→ मथुरा कृष्ण मंदिर के महंत कन्हैयालाल गोस्वामी ने समझौता कराया।

→ रामसिंह - II ने बर्टन की हत्या की जिम्मेदारी स्वीकारी।

→ करौली के राजा मदन पाल ने रामसिंह - II को मुक्त करवाया।
मदनपाल को 17 तोपों की सलामी दी गई।

→ मार्च 1858 में रावर्टस ने कोटा को पूर्णतः मुक्त करवाया।

→ जयदयाल एवं मेहराब खान को मृत्यु दण्ड दिया गया।

→ राजा रामसिंह - II को दण्डित किया गया और तोपों की सलामी घटाकर 15 से 11 कर दी।

⇒ अमरचंद बांठिया :-

→ मूल रूप से बीकानेर से थे।

→ क्रांति के दौरान झांसी की रानी लक्ष्मीबाई की आर्थिक सहायता की थी।

→ इन्हे क्रांति का भामाशाह कहा जाता है।

→ राज० के पहले शहीद थे जिन्हे फांसी दी गई थी।

Note :- बीकानेर के राजा सरदार सिंह एकमात्र राजा थे जिन्होंने रियासत से बाहर जाकर अंग्रेजो का साथ दिया।

→ हिसार के पास बाडल

→ अंग्रेजो ने सरदार सिंह को दिल्ली परगना दिया।

⇒ टोंक में विद्रोह :-

→ नवाब वजीरुद्दौला अंग्रेजो का समर्थक था लेकिन उसके सामा वीर आलम खाँ ने विद्रोहियों का साथ दिया।

→ निम्बाहेड़ा में ताराचन्द पटेल ने जैक्सन की सेना का सामना किया जैक्सन नीमच के विद्रोहियो का पीछा कर रहा था।

→ टोंक में महिलाओ ने भी क्रांति में भाग लिया।

⇒ धौलपुर :-

→ विद्रोही - रामचन्द्र बहीरालाल

→ राजा भगवन्त सिंह ने क्रांति को दबाने के लिये पटियाला से सेना बुलाई।

⇒ अलवर :- राजा - विनय सिंह → अंग्रेजो का साथ दिया

सामंत फैजल खाँ → क्रांतिकारियों का साथ दिया

⇒ भरतपुर :-

→ गुर्जर व मेव जाति द्वारा विद्रोह

→ राजा जसवन्त सिंह ने पॉ.एजेन्ट मॉरीसन को भरतपुर छोड़ने की सलाह दी

⇒ जयपुर :-

विद्रोही - [सादुल्ला खाँ
उस्मान खाँ
विलायत खाँ]

→ राजा रामसिंह - II ने पॉ.एजेन्ट ईडन के कहने पर विद्रोहियों को पकड़ लिया। तथा कैसर-ए-हिन्द की उपाधि व नगाड़ा दिया।

⇒ तात्या टोपे → वास्तविक नाम - रामचन्द्र पाण्डुरंग

→ क्रांति के दौरान दो बार राजस्थान आया।
→ सबसे पहले भीलवाड़ा के माण्डलगढ़ में आये।
→ टोंक के नासिर मोहम्मद खाँ ने तात्या टोपे का साथ दिया।
→ कुआड़ा का युद्ध (भीलवाड़ा) :- 9 अगस्त 1857

तात्या टोपे v/s रॉबर्ट्स → (विजय)
→ तात्या टोपे हार गये।

→ झालावाड़ के राजा पृथ्वी सिंह ने तात्या टोपे के खिलाफ, पलासता नामक स्थान पर अपनी सेना भेजी लेकिन गोपाल पलटन के अलावा सभी सेना ने लड़ने से मना कर दिया।
→ तात्या टोपे ने झालावाड़ पर आधिकार कर लिया।
→ पृथ्वी सिंह से 5 लाख रुपये लिये।
→ तात्या टोपे ने बांसवाड़ा पर भी आधिकार कर लिया था।
→ तात्या टोपे जैसलमेर को छोड़कर सभी रियासतों में सहायता के लिये गया था।
→ सलूम्बर के ~~जोधसिंह~~ केसरी सिंह व कोठारिया के जोधसिंह ने तात्या टोपे की सहायता की थी।
→ बीकानेर के सरदार सिंह ने तात्या टोपे को 10 घुड़सवार दिये।
→ तात्या को शरण देने के कारण सीकर के सामंत को फांसी दी गई।
→ तात्या टोपे की छतरी - सीकर में

→ कैप्टन शॉवर्स का कथन :- ***

" इतिहास में तात्या टोपे को फांसी देना ब्रिटिश सरकार का अपराध समझा जायेगा और आने वाली पीढ़ी पूछेगी कि इस सजा के लिये किसने स्वीकृति दी और किसने पुष्टि की।"

टेलीग्राम **website** व **youtube** ज्वाइन करने के लए आइकॉन पर क्लिक करें